Con. 3. 5.1.47
750

अंक 5-6

संख्या 1

बृहस्पतिवार,
14 अगस्त,
सन् 1947 ई.

भारतीय विधान-परिषद्

के

वाद-विवाद

की

सरकारी रिपोर्ट

(हिन्दी संस्करण)

विषय-सूची

पृष्ठ

1. वंदेमातरम् का गायन 1
2. अध्यक्ष का भाषण 1
3. सदस्यों द्वारा प्रतिज्ञा-ग्रहण सम्बन्धी प्रस्ताव 4
   विधान-परिषद् द्वारा सत्ता ग्रहण की तथा लार्ड माउण्टबैटन के गवर्नर-जनरल नियुक्त किए जाने की वायसराय को सूचना
4. राष्ट्रीय पताका उपस्थित किया जाना 14
5. राष्ट्रीय गीतों का गायन 17

भारतीय विधान-परिषद्

बृहस्पतिवार, 14 अगस्त, सन् 1947 ई.

भारतीय विधान-परिषद् का 5वां अधिवेशन कान्स्टीट्यूशन हाउस नई दिल्ली में रात के 11 बजे, अध्यक्ष मा. डा. राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ।

वन्देमातरम् का गान

***अध्यक्षः** कार्यक्रम का पहला विषय है वन्देमातरम् का गान। हम सब खड़े होकर इसे सुनेंगे।

(श्रीमती सुचिता कृपलानी (संयुक्त प्रांतः जनरल)
ने वन्देमातरम् गान का प्रथम पद गाया।)

अध्यक्ष का भाषण

अध्यक्षः हमारे इतिहास के इस अहम् मौके पर जब वर्षों के संघर्ष और जद्दोजहद के बाद हम अपने देश के शासन की बागडोर अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमें उस परम पिता परमात्मा को याद करना चाहिये जो मनुष्यों और देशों के भाग्य को बनाता है और हम उन अनेकानेक, ज्ञात और अज्ञात, जाने और अनजाने पुरुषों और स्त्रियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने इस दिन की प्राप्ति के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, हंसते-हंसते फांसी की तख्तियों पर चढ़ गये, गोलियों के शिकार बन गये, जिन्होंने जेलखानों में और कालापानी के टापू में घुल-घुल कर अपने जीवन का उत्सर्ग किया, जिन्होंने बिना संकोच माता-पिता, स्त्री-संतान, भाई-बहिन यहां तक कि देश को भी छोड़ दिया और धन-जन सबका बलिदान कर दिया। आज उनकी तपस्या और त्याग का ही फल है कि हम इस दिन को देख रहे हैं।

हम अपनी श्रद्धा और भक्ति का उपहार महात्मा गांधी को भी भेंट करें। तीस वर्षों से वह हमारे पथ-प्रदर्शक (राह दिखाने वाले) और एकमात्र आशा और उत्साह की ज्योति बने रहे हैं। हमारी संस्कृति और जीवन के उस मर्म का वह प्रतीक हैं जिसने हमको इतिहास की आफतों और मुसीबतों में भी जिन्दा रखा। निराशा

---

*इस चिह्न का अर्थ है कि यह अंग्रेजी वक्तृता का हिन्दी रूपान्तर है।

[अध्यक्ष]

और मुसीबत के अंधेरे कुएं से हमको उन्होंने खींच निकाला और हमारे दिलों में ऐसी जिन्दगी फूंकी कि हममें अपने जन्म-सिद्ध अधिकार (स्वराज्य) के लिये दावा पेश करने की हिम्मत और ताकत आयी और उन्होंने हमारे हाथों में सत्य और अहिंसा का अचूक अस्त्र दिया जिसके जरिये बिना हथियार उठाये स्वराज्य का अनमोल रत्न इतने कम दाम में, इतने बड़े देश के लिये और यहां के करोड़ों आदमियों के लिये हमने हासिल कर लिया। हमारे जैसे कमजोर लोगों को भी उन्होंने बड़ी चतुराई के साथ, अचल संकल्प के साथ और देश के लोगों में, अपने अस्त्र में और सबसे अधिक ईश्वर में, अटल विश्वास के साथ आगे बढ़ाया। हमारा कर्तव्य है कि हम सच्चे और अटल बने रहें। मैं आशा करता हूं कि अपनी विजय की घड़ी में हिन्दुस्तान उस अस्त्र को नहीं छोड़ेगा और उसके मूल्य को कम करके न आंकेगा जिसने उसे निराशा के गर्त से निकाल कर ऊपर उठाया और जिसने अपनी शक्ति और उपयोगिता को भी प्रमाणित कर दिया है। संसार के भविष्य के निर्माण में जब लड़ाई से दुनिया के लोग ऊब गये और घबराये हुये हैं, उस अस्त्र को बड़ा काम करना है। लेकिन ये बड़ा काम हिन्दुस्तान दूर से दूसरों की नकल करके नहीं पूरा कर सकता है और न हथियारों को जमा करने और ऐसे अस्त्रों के बनाने में, जो ज्यादा से ज्यादा बरबादी कम से कम समय में कर सकते हैं, दूसरों से मुकाबला करके वह पूरा कर सकता है। आज इस देश को मौका मिला है और हम आशा करते हैं कि इसमें उतनी हिम्मत और शक्ति होगी कि वह संसार के सामने लड़ाई, मृत्यु और बरबादी से बचाने का अपना अस्त्र पेश कर सकेगा। संसार को इसकी जरूरत है। अगर वह लड़खड़ाता हुआ बर्बरता के युग में जहां से निकल आने का वह दावा करता है, फिर पहुंचना नहीं चाहता है तो वह इसका स्वागत भी करेगा।

दुनिया के सभी देशों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हम अपने इतिहास के अनुसार सबके साथ दोस्ती, मित्रता का बर्ताव रखना चाहते हैं। किसी से हमारा कोई द्वेष नहीं, हमें किसी के साथ घात नहीं करना है और हम उम्मीद करते हैं कि हमारे साथ कोई ऐसा नहीं करेगा। हमारी एक ही आशा और अभिलाषा है और वह यह कि हम सबके लिये स्वतंत्रता और मानव जाति में शान्ति और सुख स्थापित करने में मददगार हो सकें।

जिस देश को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया था, उसके आज दो टुकड़े हो गये हैं नज़दीक के लोगों से बिछुड़ना तो दुखदाई होता ही है। बिछुड़ना हमेशा

दुखदाई होता है। ऐसे लोगों से भी बिछुड़ना जिनके साथ थोड़े ही दिनों का सम्बंध हो, दुखदायी होता है, इसलिये मुझे यह कहना पड़ता है कि इस बंटवारे से हमारे दिल में दुख है। मगर इसके बावजूद हम आपकी तरफ से और अपनी ओर से पाकिस्तान के लोगों को अपनी नेकनीयती और उनकी तरक्की और कामयाबी के लिये अपनी सद्इच्छा सद्भावना प्रकट करना चाहते हैं। जिस शासन के काम में आज वे लग रहे हैं उसमें हम उनकी पूरी कामयाबी चाहते हैं। ऐसे लोगों को जो बंटवारे से दुखी हैं और पाकिस्तान में रह गये हैं, हम अपनी शुभकामना भेजते हैं। उनको घबराना नहीं चाहिये अपने घरबार, धर्म और संस्कृति को बचाये रखना चाहिये और हिम्मत और सहिष्णुता से काम लेना चाहिये। उनके ऐसा भय करने का कोई कारण नहीं कि उनके साथ ठीक और न्यायपूर्ण बर्ताव नहीं होगा और उनकी रक्षा नहीं होगी। जो आश्वासन दिया है उसको मान लेना चाहिये और जहां पर आज वे रह रहे हैं वहां अपनी वफादारी और सच्चाई से अपनी मुनासिब जगह, उन्हें हासिल करनी चाहिये।

हिन्दुस्तान में जो अल्पसंख्यक लोग हैं उनको हम आश्वासन देना चाहते हैं कि उनके साथ ठीक और इन्साफ का बर्ताव होगा और उनके और दूसरों के बीच कोई फर्क नहीं किया जायेगा। उनके धर्म और संस्कृति और उनकी भाषा सुरक्षित रहेगी और नागरिकता के सभी अख्तियार और अधिकार उनको मिलेंगे। उनसे आशा की जायेगी कि जिस देश में वे रहते हैं उसकी तरफ और उस देश के विधान की तरफ, वे वफादार बने रहें। सभी लोगों को हम यह आश्वासन देना चाहते हैं कि हमारी अथक् कोशिश होगी कि देश से गरीबी और दीनता, भूख और बीमारी दूर हो जाये, मनुष्य मनुष्य के बीच से भेदभाव उठ जाये, कोई मनुष्य दूसरे का शोषण न करे, सबके लिये सुन्दर समुचित जीवन बिताने का साधन जुटा दिया जाये। हम एक बड़े काम में लगने जा रहे हैं। हम आशा करते हैं कि देश के सभी लोग हमारे इस काम में मदद और सहयोग देंगे और संसार के दूसरे देश अपनी सहानुभूति और सहायता देंगे। हम आशा करते हैं कि हम अपने को इस योग्य साबित कर सकेंगे।

अध्यक्षः इसके बाद अब मेरा प्रस्ताव है कि हम सब उन वीरों की पुण्य स्मृति में, जिन्होंने देश में और बाहर स्वातंत्र्य-संग्राम में अपनी बलि दी है, कुछ क्षण मौन खड़े रहें।

(सभा दो मिनट तक मौन खड़ी रही।)

सदस्यों द्वारा प्रतिज्ञा ग्रहण सम्बन्धी प्रस्ताव

अध्यक्षः अब पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपना प्रस्ताव उपस्थित करेंगे।

माननीय पं. जवाहरलाल नेहरू (संयुक्त प्रांतः जनरल): साहब सदर, कई वर्ष हुये कि हमने किस्मत से एक बाज़ी लगाई थी, एक इकरार किया था, प्रतिज्ञा की थी। अब वक्त आया कि हम इसे पूरा करें। बल्कि वह पूरा तो शायद अभी भी नहीं हुआ, लेकिन फिर भी एक बड़ी मंजिल पूरी हुई। हम वहां पहुंचे हैं। मुनासिब है कि ऐसे वक्त में पहला काम हमारा यह हो कि हम एक प्रण और एक नई प्रतिज्ञा फिर से करें। इकरार करें, आइन्दा हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के लोगों की खिदमत करने का। चन्द मिनटों में यह असेम्बली एक पूरी तौर से आजाद खुदमुख्तार असेम्बली हो जायेगी और यह असेम्बली नुमाइन्दगी करेगी एक आज़ाद खुदमुख्तार मुल्क की। चुनाचे, इसके ऊपर जबरदस्त जिम्मेदारियां आती हैं और अगर हम इन जिम्मेदारियों को पूरी तौर से महसूस न करें तब शायद हम अपना काम पूरी तौर से न कर सकेंगे। इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि इस मौके पर पूरी तौर से सोच-समझ कर इसका इकरार करें। जो रिजोल्यूशन, प्रस्ताव, मैं आपके सामने पेश कर रहा हूं वह इसी इकरार, इसी प्रतिज्ञा का है। हमने एक मंजिल पूरी की और आज उसकी खुशियां मनाई जा रही हैं। हमारे दिल में भी खुशी है और किस कदर गुरूर है और इत्मीनान है लेकिन यह भी हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान भर में खुशी नहीं है। हमारे दिल में रंज के टुकड़े काफी हैं और—दिल्ली से बहुत दूर नहीं—बड़े बड़े शहर जल रहे हैं। वहां की गर्मी यहां आ रही है। खुशी पूरे तौर से नहीं हो सकती; लेकिन फिर भी हमें इस मौके पर हिम्मत से इन सब बातों का सामना करना है। न हाय-हाय करना है न परेशान होना है। जब हमारे हाथ में बागडोर आयी तो फिर ठीक तरह से गाड़ी को चलाना है। आमतौर से अगर मुल्क आज़ाद होते हैं, काफी परेशानियां मुसीबतों और खूरेजी के बाद होते हैं। काफी ऐसी खूरेजी हमारे मुल्क में भी हुई है और ऐसे ढंग से हुई जो बहुत ही तकलीफदेह हुई है। फिर भी हम आज़ाद हुये, बाअमन तरीकों से, शांतिमय तरीकों से और एक अजीब मिसाल हमने दुनिया के सामने रखी। हम आज़ाद हुये लेकिन आज़ादी के साथ मुसीबतें और बोझे आते हैं। उनका हमें सामना करना है। उनको ओढ़ना है और जो स्वप्न हमने देखा था उसे असल बनाना है। हमें मुल्क को आज़ाद करना था, मुल्क से गैर हकूमत को अलग करना था, वह काम पूरा हुआ। लेकिन, गैर हकुमत को अलग करके काम पूरा नहीं होता। जब तक एक एक इन्सान हिन्दुस्तान का आज़ादी की हवा में न रहे सके और

जो मुसीबतें हैं वह हटाई न जायें और जो उसकी तकलीफें हैं, दूर न हो सकें इसलिये बहुत बड़ा हिस्सा हमारे काम का बाकी है और जब तक वह बातें पूरी न हों उस वक्त तक हमारा काम जारी रहेगा। बड़े-बड़े सवाल हमारे सामने हैं और उनकी तरफ देखकर कुछ दिल दहल जाता है, लेकिन फिर हिम्मत यह सोच कर आती है कि कितने बड़े सवाल हमने पुराने जमाने में हल किये तो क्या हम इन सवालों से दब जायेंगे? ताकत और गुरूर तो हमारा शक्शी और व्यक्तिगत नहीं है। लेकिन कुछ गुरूर है अपने मुल्क पर, और कुछ इतमीनान है अपने कौम की ताकत पर और उन पर जिन लोगों ने इतनी बड़ी मुसीबतें झेलीं। इसलिये यह भी इतमीनान होता है कि जो इस वक्त कुछ परेशानियों का बोझ है उनको भी हम ओढ़ेंगे और उन सवालों को भी हम हल करेंगे। आखिर हिन्दुस्तान एक आज़ाद मुल्क है, अच्छा है। जब हम आज़ादी के दरवाजे पर खड़े हैं, हम इसको खासतौर से याद रखें कि हिन्दुस्तान किसी एक फिरके का मुल्क नहीं है, एक मजहब वालों का नहीं है, बल्कि बहुत सारे और बहुत किस्म के लोगों का है। बहुत धर्म और मजहबों का है। किस तरह की आज़ादी हम चाहते हैं? हमारी तरफ से पहले भी यह कहा गया है। जो पहला रिजोल्यूशन मैंने पहले यहां पेश किया था उसमें भी यह कहा गया था कि यह जो आजादी हमारी है, वह हरेक हिन्दुस्तानी के लिये है, हरेक हिन्दुस्तानी का बराबर-बराबर का हक है, हर हिन्दुस्तानी को इस आज़ादी का बराबर-बराबर का हिस्सेदारी करना है। इस ढंग से हम आगे बढेंगे और कोई ज्यादती करेगा तो उसे हम रोकेंगे, चाहे वह कोई हो; किसी पर अगर ज्यादती होगी तो उसकी मदद करेंगे, चाहे वह कोई भी हो। अगर हम इस तरह से चलेंगे तो हम बड़े मसले हल कर लेंगे। लेकिन अगर हम तंग ख्याली में पड़ जायेंगे तो वह मसले हल नहीं होंगे।

मैं इस रिजोल्यूशन को आपके सामने पेश करता हूं और अंग्रेजी जबान में भी इसको पढ़कर अभी आपको सुनाऊंगा।

(इसके बाद पं. जवाहरलाल नेहरू ने प्रस्ताव को अंग्रेजी जबान में सभा को पढ़कर सुनाया)

निश्चय किया जाता है कि:

(1) रात के बारह बजते ही विधान-परिषद् के सभी उपस्थित सदस्य निम्नलिखित प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे:

''अब जबकि हिन्द वासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आजादी)

[माननीय पं. जवाहरलाल नेहरू]

हासिल कर ली है, मैं . . . जो उस विधान परिषद् (आईन साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकिसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिये अपने को अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश (मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्ज़त) जगह पा लेवे और संसार शान्ति स्थापना (अमन कायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगा कर खुशी-खुशी हाथ बंटा सके।

(2) वे सदस्य जो इस अवसर पर अनुपस्थित हैं, उस समय जब वे परिषद् के अधिवेशन में इसके बाद उपस्थित हों तो इस प्रतिज्ञा को (ऐसे शाब्दिक परिवर्तनों के साथ जैसा अध्यक्ष निर्धारित करें) ग्रहण करेंगे। *(तुमुल हर्षध्वनि)*

***चौ. खलीकुज्जमां** (संयुक्त प्रांतः मुस्लिम): जनाबे सदर, गालिबन आधी रात के बाद हिन्दुस्तान की तारीख में वह अजीम इन्कलाब होने वाला है जिसके लिये एक सदी से हिन्दुस्तान अपनी आज़ादी की लड़ाई में मशरूफ रहा। वह घड़ी, वह साइत जिसके लिये बहुत से हिन्दुस्तान के बाशिन्दों ने अपनी जानें भी कुरबान कीं, वह साइत बहुत करीब आ रही है। जहां आज इन कुरबानियों के नतीजे में आपको आज़ादी नसीब हुई, वहां हमारे सामने एक दूसरा सवाल इससे भी ज्यादा अहम पेश हो जाता है। लड़ाई खत्म हुई, मगर एक दूसरी किस्म की लड़ाई शुरू होने वाली है। वह लड़ाई किसी गैर से नहीं, खुद अपनों ही से होने वाली है। जाहिर है कि जब किसी कौम से किसी दूसरी किस्म की लड़ाई थी तो उसमें दूसरे किस्म के जज्बात, दूसरे किस्म की हरकात और अमल हमको अख्तियार करना पड़ता। अब वह दौर आने वाला है जब हमको बहुत बड़ी जिम्मेदारियां संभालनी होंगी। इनमें तालियों की गुंजाइश नहीं होगी इनमें बड़े-बड़े नारे न होंगे, क्योंकि जो काम आज के बाद से इस मुल्क के लीडरान और हाउस के जिम्मे आने वाला है, वह दिखाने का नहीं है बल्कि वह मेहनत मशक्कत और खामोशी से इन्सान की खिदमत का है। हम जानते हैं बहुत बड़ी जिम्मेदारी इस असेम्बली के सामने है और वह एक दस्तूर बनाने की है। और एक ऐसा दस्तूर कि जिसमें हिन्दुस्तान की महज अकलियतों को नहीं, बल्कि तमाम बाशिन्दों व अवाम को, गरीब को, हर एक को, वह दस्तूर कफील हो और इसके जरिये से हम हिन्दुस्तान के रहने वाले बाशिन्दों की खिदमत कर सकें। यह बहुत बड़ा अज़ीम काम है।

इस तरह से बहुत सी जिम्मेदारी एडमिनिस्ट्रेशन की खास हाउस को उस वक्त तक जब तक कोई इन्तखाब न हो, संभालना है। एडमिनिस्ट्रेशन की जिम्मेदारी में कभी-कभी लानतें भी पड़ती हैं, कभी-कभी गालियां भी सुननी पड़ती हैं, ईंटें भी फेंकी जाती हैं, इन सबको बर्दाश्त करना पड़ता है। जिस किस्म की प्लैज, हलफ, आपके सामने है, इसको पढ़ने से आप यह मालूम कर लेंगे कि इसकी बड़ी जिम्मेदारी है। यों तो हलफ मैं समझता हूं कि जिस वक्त मेम्बरान यहां आये हैं, हलफ लेकर आये हैं कि जहां तक होगा, हकतुल मकदूर हम अपने मुल्क की पूरी खिदमत ईमानदारी और दियानत से करेंगे। एक बाजाब्ता हलफ का कुछ जहनी असर इन्सान की खिलकत और तवीयत पर पड़ता है। लिहाजा मैं समझता हूं, यह मौका बहुत अच्छा है कि आज कल इसके कि वह जिम्मेदारी लें, अभी यहां दुनिया के सामने अपने आपको पाबन्द करें। हलफ लेकर अपने आमाल व अफआल में सबसे पहले स्टेट और उसके कायदे को पेश नजर रख कर हम काम करेंगे। इसमें किसी जात के सिफात का खयाल न होगा। इसमें जहां तक होगा ईमानदारी के साथ हम हर सख्श का हक देने की कोशिश करेंगे। आज यह हलफ उठाकर जिस वक्त हम बाहर निकलेंगे, हम हिन्दुस्तान के रहने वालों को एक निवेदन देंगे कि हमने तुम्हारे लिये हलफ उठाया है कि हम ईमानदारी से पूरी जिम्मेदारी को उठायेंगे और जिम्मेदारी को अदा करने में किसी की रिआयत नहीं करेंगे।

मैं इन चन्द अलफाज़ के साथ हलफनामा और तजवीज की, जो पं. जवाहरलाल ने पेश किया है, ताईद करता हूं। और मैं समझता हूं हर वह मेम्बर जो यहां मौजूद है, निहायत ईमानदारी के साथ, दियानत के साथ इस हलफ को उठायेगा कि हम इस स्टेट की खिदमत में अपनी तमाम जिन्दगी खत्म करेंगे।

***श्री एस. राधाकृष्णन** (संयुक्त प्रान्तः जनरल): अध्यक्ष महोदय, यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रस्ताव पर, जिसे इतने प्रभावोत्पादक रूप से पं. जवाहरलाल नेहरू ने उपस्थित किया है और जिसका शानदार समर्थन चौ. खलीकुज्जमा ने किया है, मैं कुछ कहूं। आज के दिन को लेकर इतिहास रचा जायेगा तथा गाथायें प्रस्तुत की जायेंगी। हमारे गणतंत्र प्राप्ति के इतिहास में आज का दिन विशेष महत्वपूर्ण है, इससे हमारा एक नया क्रम प्रारम्भ होता है। भारतवासी आज पुनर्निर्माण के प्रयास में संलग्न हैं, वे अपना आमूल परिवर्तन करने में प्रयत्नशील हैं। इनके इस प्रयास के इतिहास में आज का दिन विशेष महत्व रखता है। एक चिरप्रतीक्षा की रजनी के अवसान पर ऐसी रजनी जो भाग्य निर्णायक शुभ-घटनाओं से परिपूर्ण

[श्री एस. राधाकृष्णन्]

थी, जिसमें स्वातंत्र्य सूर्य के दर्शन के लिये हमने नीरव प्रार्थनायें कीं, जिसमें क्षुधा मृत्यु के भयंकर भूतप्रेत सदा विभीषिश उत्पन्न करते रहे, जिसमें हमारे प्रहरी सदा जागरूक थे और जिसमें प्रकाश का आलोक सदा दीप्त रहा—अब स्वातंत्र्य सूर्य की रश्मियां निकल रही हैं और हम इसका साहोत्साह स्वागत करते हैं। जब हम आज दासता और पराधीनता से मुक्त होकर स्वतंत्रता के प्रांगण में पदार्पण कर रहे हैं तो वस्तुतः यह आनन्द का अवसर है। यह बड़े ही सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि इस परिवर्तन को इतने सुव्यवस्थित रूप से मर्यादा पूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। हाउस आफ कामन्स में मि. एटली ने जब यह कहा कि यह पहला महान् उदाहरण है जब एक सुदृढ़, शक्तिशाली साम्राज्यवादी राज्य अपनी सत्ता अपने शासितों को सौंप रहा है जिन पर उसने प्रायः दो शताब्दियों तक बड़ी दृढ़ता से और बलपूर्वक शासन किया है, तो उन्होंने एक अभिमान और गौरव का बोध किया था, जो स्पष्ट था। इसकी तुलना के लिये उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका से ब्रिटेन के हट जाने का उदाहरण उपस्थित किया था। परन्तु जिस परिस्थिति में और जिस पैमाने पर ब्रिटेन आज भारत से हट रहा है उसकी तुलना में दक्षिणी अफ्रीका से उसका हटना कुछ भी नहीं है। जब हम आज इण्डोनेशिया में डच लोगों के कारनामें देखते हैं, जब हम यह देखते हैं कि फ्रांस किस तरह अपने उपनिवेशों से चिपटा हुआ है, तो अंग्रेजों के राजनैतिक साहस और बुद्धिमत्ता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। *(हर्ष ध्वनि)*

अपनी ओर से हमने भी विश्व के इतिहास में एक अध्याय जोड़ दिया है। जरा गौर कीजिये कि इतिहास में पराधीन जातियों ने किस तरह अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की है। यह भी सोचिये कि किस तरह लोगों ने अधिकार प्राप्त किये हैं। वाशिंगटन, नैपोलियन, क्रामवेल, लेनिन, हिटलर, और मसोलिनी सरीखे व्यक्तियों ने किस तरह सत्ता प्राप्त की है? बल प्रयोग, आतंक, हत्या, नरमेध और विप्लव की उन पद्धतियों पर जरा ध्यान दीजिये जिनसे संसार के इन तथाकथित महापुरुषों ने सत्ता प्राप्त की थी। यहां इस देश में हमने उस व्यक्ति के नेतृत्व में जो सम्भवतः इतिहास में इस युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष कहा जायगा *(तुमुल हर्ष ध्वनि),* धीरता से क्रोध का सामना किया तथा आत्मिक शांति से नौकरशाही के अत्याचार के वार संभाले। और आज हम सभ्य एवं शांतिमय उपायों से सत्ता प्राप्त कर रहे हैं। आखिर उसका परिणाम क्या हुआ? इसका परिणाम यह हुआ कि यह महान्

परिवर्तन आज बिना लेशमात्र कटुता के, बिना रंचमात्र घृणा के कार्यान्वित किया जा रहा है। लार्ड माउण्टबैटन को हम भारत का गवर्नर-जनरल नियुक्त कर रहे हैं और इस तथ्य से ही हमारे पारस्परिक मैत्री और समझौते की भावना प्रकट है जिसके आधार पर यह समूचा परिवर्तन कार्यान्वित किया जा रहा है। *(हर्ष ध्वनि)*

अध्यक्ष महोदय, आपने अभी हमारे हृदयस्थित उस दुख और शोक की चर्चा की थी जिससे हमारा आज का आनन्द तिरोहित हो गया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि वस्तुतः इसके लिये हम जिम्मेदार हैं, यद्यपि पूर्णरूप से नहीं। सन् 1600 ई. से अंग्रेज यहां आये हैं, उनके पादरी आये, ईश्वर से विकायें आई। व्यापारी, साहसी, यात्री, राजनीतिज्ञ (diplomats), धर्मप्रचारक और आदर्शवादी आये। उन्होंने यहां क्रय-विक्रय किया, लड़ाईयां लड़ीं, षडयन्त्र किया और उससे लाभ उठाया, देशवासियों की सहायता की और उनके दुख दर्द दूर किये। इनमें जो महापुरुष थे उन्होंने इस देश को आधुनिकता से सुसज्जित करना चाहा, इसके बौद्धिक और नैतिक स्तर को, इसकी राजनैतिक प्रतिष्ठा (status) को ऊंचा करना चाहा। उन्होंने समूचे देश को नवजीवन से अनुप्राणित करना चाहा। परन्तु इनमें जो क्षुद्र थे उन्होंने जघन्य उद्देश्यों की सिद्धि के लिये यहां काम किया। उन्होंने देश में अनैक्य (disunion) बढ़ाने की चेष्टा की और देश को अधिकाधिक निर्धन, दुर्बल और ऐक्य हीन बना दिया। उन्हें भी आज यहां अवसर मिला है। जो स्वाधीनता हमें आज उपलब्ध हो रही है, वह ब्रिटिश शासकों की इसी द्वैध मनोवृति का परिणाम है। भारत स्वाधीनता तो आज पा रहा है पर जिस ढंग पर इसकी प्राप्ति हो रही है उससे देशवासियों के हृदय में आनन्द नहीं उत्पन्न हो रहा है, उनके चेहरों पर स्वाभाविक आह्लाद की प्रभा नहीं दिखाई पड़ती है। जिन पर इस देश के शासन की जिम्मेदारी थी उनमें से कुछ लोगों ने साम्प्रदायिकता की भावना को और उग्र बनाने की तथा वर्तमान स्थिति लाने की कोशिश की, जो ब्रिटेन के लघु मस्तिष्कों द्वारा अपनायी हुई नीतियों का स्वाभाविक परिणाम है। परन्तु इसके लिये मैं उनको नहीं दोष दूँगा। हम पर लादी हुई पार्थक्य सम्बन्धी प्रवृतियों ने क्या हमें पराभूत नहीं किया? क्या हम चरित्र सम्बन्धी अपने उन जातीय दुर्गुणों को दूर नहीं करेंगे जिनके कारण हममें तरह-तरह के अन्धकार संकुचित मनोवृति और अन्धविश्वास जनित कट्टरताओं ने हमें दबा रखा है। दूसरे लोग हमारी कमजोरियों से लाभ उठाने में समर्थ हुए, और इसलिये समर्थ हुए कि कमजोरियां हममें थीं। इसलिये इस अवसर पर मैं आपसे कहूंगा कि आप आत्मपरीक्षण करें, अपने हृदयों को टटोलें, हमने स्वाधीनता प्राप्त की है पर उस तरह नहीं जैसे हम चाहते थे और इसके

[श्री एस. राधाकृष्णन्]

लिये हम स्वयं जिम्मेदार हैं। और जब हम प्रस्तुत प्रतिज्ञा में यह कहते हैं कि हम अपने देश की सेवा करेंगे तो इन मूलगत दुर्गुणों को दूर करके ही हम देश की सर्वोत्तम सेवा कर सकते हैं। इन दुर्गुणों के कारण ही हम अपने लक्ष्य की—स्वतंत्र, संयुक्त भारत की—प्राप्ति नहीं कर पाये।

अब जब भारत विभक्त हो गया है, हमारा यह कर्तव्य है कि हम आवेशपूर्ण शब्दों का प्रयोग न करें। इससे कुछ लाभ नहीं। हमें आवेश को रोकना होगा, क्रोध और बुद्धिमत्ता इन दोनों का समन्वय असम्भव है। राजनीतिक दृष्टि से हम भले ही विभक्त हो गये हों पर हमारी सांस्कृतिक एकता अभी पूर्ववत बनी है *(हर्षध्वनि)*, राजनैतिक विभाजन, धरातल का बंटवारा बाह्य वस्तु है परन्तु मनोवैज्ञानिक विभाजन की नीति बड़ी गहरी होती है। सांस्कृतिक वैषम्य (cleavages) और भी सांघातिक होता है और हमें चाहिये कि इस वैषम्य को हम कभी न बढ़ने दें। हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम उन सांस्कृतिक बंधनों को, उन आध्यात्मिक बंधनों को स्थायी बनाये रखें जिनके कारण अब तक हम सब एक प्राण थे। धीरतापूर्वक विचार, शिक्षा का शनैः शनैः प्रसार, एक दूसरे की आवश्यकताओं का समन्वय, उन दृष्टि बिंदुओं की खोज जो यातायात, रक्षा, वैदेशिक मामले आदि के सम्बन्ध में दोनों राज्यों के लिये समानरूप से आवश्यक हैं—ये ऐसी बातें हैं कि जिन्हें हमें अपने दैनिक जीवनचर्या में और शासन में प्रश्रय देना होगा। इसी तरह की प्रवृति को समुन्नत करके ही हम पुनः एक दूसरे के सन्निकट आ पायेंगे और देश की खोई हुई एकता को फिर से प्राप्त कर सकेंगे। यही इसका एकमात्र रास्ता है। हमें समधिक अवसर प्राप्त हैं, पर मैं आपको सावधान करूंगा कि अधिकार के सामने जब योग्यता का तिरस्कार किया जायेगा तो हम दुर्दिन में पड़ जायेंगे। हमें क्षमता और योग्यता को बढ़ाना होगा और इन्हीं की सहायता से हम उन अवसरों को उपयोग कर सकेंगे जो हमें अब प्राप्य हैं। कल सवेरे से, बल्कि आज मध्य रात्रि के उपरान्त से ही हम अंग्रेजों को अब दोष नहीं दे सकते। हम जो कुछ भी करेंगे उसका दायित्व हमें स्वयं ग्रहण करना होगा। भोजन, वस्त्र, आश्रयस्थान तथा सामाजिक सेवाओं के सम्बन्ध में सर्वसाधारण नागरिकों के लिये हम जो करेंगे उसी से स्वतंत्र भारत की परख (judge) की जायेगी। उच्च पदस्थ कर्मचारियों को भ्रष्टाचार (nepotism) के अधिकार का मोह, मुनाफाखोरी और चोर बाजारी, इन सबने गत कुछ दिनों से इस महान् देश के सुनाम को कलंकित कर रखा है और जब तक हम इन दूषणों का आमूल विनाश नहीं कर देते तब तक न तो हम देश की शासन व्यवस्था

को समुन्नत बना सकते हैं और न जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन और वितरण सम्बन्धी स्तर को ही ऊंचा कर सकते हैं।

विश्व-शान्ति और मानव कल्याण की समुन्नति के लिए इस देश की कितनी बड़ी देन होगी। इसकी चर्चा पं. जवाहरलाल नेहरू ने की है। हमारी पताका पर अंकित सम्राट अशोक का यह चक्र एक महान् आदर्श का प्रतीक है। अशोक की महिमा के सम्बन्ध में लिखे हुए श्री एच. जी. वेल्स के इन शब्दों पर ध्यान दीजिये: ''महत्ता, महिमा, वैभव एवं गौरव आदि गुणों से भूषित पुरुषों का एक देदीप्यमान आदर्श–सर्वश्रेष्ठ सम्राट अशोक''। सम्राट अशोक ने विभेद और कलह जनित क्लेशों को दूर करने के लिये शिलाओं पर उपदेश खुदवाये। उसका कहना है कि अगर मतभेद है तो इसको दूर करने का सर्वोत्तम रास्ता है concord को पढ़ाना ''समवाय एव साधु:''। इसके सिवाय हम लोगों के पास इसका और कोई उपाय नहीं है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें एक ऐसा नेता प्राप्त है जो समस्त संसार का नागरिक है, जो मानवता का महान् पुजारी है, जो परिस्थितियों के विषमरूप से प्रतिकूल होने पर भी, मानव जीवन क्रम में घोर विरोधिता होने पर भी एक दृढ़ आशावादी बना रहता है और सद्बुद्धि पर सदा दृढ़ रहता है। हमने देखा है कि किस तत्परता और समयानुकूल ढंग से उनके विभाग ने इन्डोनेशिया के मामले में हाथ डाला *(हर्ष ध्वनि)*। इससे प्रकट है कि अगर भारतवर्ष ने स्वाधीनता प्राप्त की है तो वह उसका उपयोग न केवल अपने कल्याण के लिये ही करेगा बल्कि विश्व-कल्याण के लिए करेगा। हमारी प्रतिज्ञा में कहा गया है कि यह प्राचीन देश संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा। हमें इस देश की प्राचीनता पर गर्व है क्योंकि इसने इतिहास की पांच सहस्त्राब्दियां देखी हैं, इसने कई उत्थान और पतन देखे हैं और इस समय भी यह अपने महान् आदर्शों की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। सभ्यता एक आन्तरिक वस्तु है, आत्मा की चीज है, यह बाह्य जगत से सम्बन्ध रखने वाली और स्थूल और निष्प्राण वस्तु नहीं है। मानव हृदयों की आकांक्षा का यह प्रतिबिम्ब है। यह अन्तरात्मा की लालसा है। यह मानव जीवन के सम्बन्ध में अपनी कल्पना-मूलक व्याख्या है, मानव अस्तित्व सम्बन्धी रहस्य की अपनी उपलब्धि या अपना बोध है। सभ्यता वस्तुत: इन्हीं बातों के लिये है। इस महान् आदर्शों को हमें ध्यान में रखना होगा जिनको चिरकाल से हम अपनाते आ रहे हैं। अपने इतिहास के इस महत्वपूर्ण काल में विनय-पूर्वक भगवान के सम्मुख खड़ा होना चाहिये, इस महान् कार्य के लिए कटिवद्ध हो जाना चाहिए जो हमारे सामने है और ऐसा आचरण करना चाहिए जो भारत की चिरप्राचीन

[श्री एस. राधाकृष्णन्]

भावना के अनुरूप हो। यदि हम ऐसा करें तो मुझे इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि इस देश का भविष्य वैसा ही महान् होगा जैसा कि इसका अतीत महिमामय रहा है।

सर्वभूतास्थमात्मानं सर्व भूतानि चात्मनि।
संपश्यं आत्म योगावै स्वराज्यं अधिगच्छति।।

ऐसी सहिष्णु प्रवृत्ति का विकास ही स्वराज्य है, जिसमें मनुष्य को मनुष्य में परमात्मा दिखाई देने लगता है। असहिष्णुता हमारी उन्नति में प्रबलतम बाधक रही है। एक दूसरे के विश्वासों, विचारों के प्रति सहिष्णु होना ही एकमात्र मार्ग है जिसे हम अपना सकते हैं। इसलिए मैं बड़ी प्रसन्नता से इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं जिसमें देशवासियों के हम सब प्रतिनिधियों से कहा गया है कि विनम्रता के साथ हम देशवासियों की सेवा में अपने को अर्पण कर दें। यहां विनम्रता का भाव यह है कि स्वयं हम कुछ नहीं हैं। हमारे प्रयास ही हमें बहुत दूर नहीं ले जा सकेंगे। हमें स्वयं अहम् को छोड़कर उस अन्य का, अर्थात् सदाचार और साधुवृत्ति का, सहारा लेना है। यहां विनम्रता का भाव यह है कि व्यक्ति महत्वशून्य है और सर्व महत्वपूर्ण है वह उद्देश्य जिसे पूर्ण करने का हमें आह्वान मिला है। अतः विनम्रता एवं आत्मनिवेदन की भावना से, आइए 12 बजते ही हम सब यह प्रतिज्ञा ग्रहण करें।

***अध्यक्षः** अब मैं प्रस्ताव पर मत लूंगा।

पहले मैं प्रस्ताव को सुना देता हूं।

''निश्चय किया जाता है कि:

'(1) रात को बारह बजते ही विधान-परिषद् के सभी उपस्थित सदस्य निम्नलिखित प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे:

''अब जबकि हिन्दवासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आज़ादी) हासिल करली है, मैं . . . जो उस विधान-परिषद् (आईन साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिए अपने को अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश

(मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्जत) जगह पा लेवे और संसार में शांति स्थापना (अमन कायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी-खुशी हाथ बंटा सके।

(2) वे सदस्य जो इस अवसर पर अनुपस्थित हैं, उस समय जब वे परिषद् के अधिवेशन में इसके बाद उपस्थित हों तो इस प्रतिज्ञा को (ऐसे शाब्दिक परिवर्तनों के साथ जैसा अध्यक्ष निर्धारित करें) ग्रहण करेंगे।''

श्री एच. वी. कामत (मध्य प्रान्त और बरार: जनरल): श्रीमान् मेरे नाम दो संशोधन हैं, पर चूंकि अपने भाषण में आपने ईश्वर के पवित्र नाम का आवाह्न (invoke) किया है और प्रतिज्ञा का जो स्वरूप हमारे सामने है, उसमें संक्षिप्त सुधार करके प्रतिज्ञा में भगवद्-भावना लादी है, और सर्वोपरि इसलिए कि मुहूर्त का समय शीघ्रता से सन्निकट आता जा रहा है, मैं अपना संशोधन नहीं उपस्थित करना चाहता।

***अध्यक्ष:** धन्यवाद। अब मैं प्रस्ताव पर मत लेता हूं। सदस्यगण 'स्वीकार है' कहकर अपनी स्वीकृति देंगे।

प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

***अध्यक्ष:** अभी हमने यह निश्चय किया है कि 12 बजते ही हम प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे। पहले मैं अपनी भाषा में इसका एक-एक वाक्य पढ़ता जाऊंगा और आशा है कि वे सदस्य जो उस भाषा को जानते हैं, उसको दुहराते जायेंगे। उसके बाद में अंग्रेजी में एक-एक वाक्य पढ़ता जाऊंगा और आशा करूंगा कि सदस्य उसे दुहराते जायेंगे। प्रतिज्ञा ग्रहण करने के समय कृपया सदस्य खड़े हो जायेंगे, पर दर्शक बैठे रहेंगे। बारह बजने में ठीक आधा मिनट बाकी है। बस घड़ी के 12 की घंटी देने की मैं प्रतीक्षा ही कर रहा हूं।

[घड़ी के 12 (मध्य रात्रि) बजाते ही अध्यक्ष तथा सदस्यगण खड़े हो गये और प्रतिज्ञा ग्रहण की। अध्यक्ष ने प्रतिज्ञा का एक-एक वाक्य पहले हिन्दुस्तानी में और फिर अंग्रेजी में पढ़ा और सदस्यों ने उसे दुहराया।]

[अध्यक्ष]

''अब जब कि हिन्दवासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आजादी) हासिल कर ली है, मैं... जो इस विधान परिषद् (आइने साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकिसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिए अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश (मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्जत) जगह पा लेवे और संसार में शान्ति स्थापना (अमन कायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी-खुशी हाथ बटा सकें।''

विधान परिषद् द्वारा सत्ता ग्रहण की तथा लार्ड माउन्टबैटन के गवर्नर-जनरल नियुक्त किए जाने की वायसराय को सूचना

***अध्यक्ष:** मैं प्रस्ताव करता हूं कि:

''वायसराय को इस बात की सूचना दी जानी चाहिये कि:

'(1) भारतीय विधान-परिषद् ने भारत का शासनाधिकार ग्रहण कर लिया है,

(2) भारतीय विधान-परिषद् ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है कि 15 अगस्त, सन् 1947 ई. से लार्ड माउन्टबैटन इन्डिया के गवर्नर-जनरल हों, और

(3) यह संदेश अध्यक्ष तथा पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा लार्ड माउन्टबैटन के पास पहुंचाया जाये।'' *(हर्ष ध्वनि)*

मैं माने लेता हूं कि सभा इसे स्वीकार करती है।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

राष्ट्रीय पताका का उपस्थित किया जाना

***अध्यक्ष:** अब भारतीय महिला समाज की ओर से श्रीमती हंसा मेहता राष्ट्रीय पताका भेंट करेंगी। *(हर्ष ध्वनि)*

श्रीमती हंसा मेहता (बम्बई: जनरल): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती सरोजिनी नायडू की अनुपस्थिति में, मेरा यह परम सौभाग्य है और इसका

मुझे अभिमान है कि भारतीय महिलाओं+ की ओर से राष्ट्र को आपकी मार्फत यह पताका भेंट देती हूं।

+1—सरोजिनी नायडू
2—अमृत कौर
3—विजयलक्ष्मी पंडित
4—हंसा मेहता
5—अम्मू स्वामिनाथन्
6—सुचिता कृपलानी
7—कुदसिया ऐजाज़ रसूल
8—दुर्गाबाई
9—रेणुका राय
10—दाक्षायणी वेलायुदन
11—पूर्णिमा बनर्जी
12—कमला चौधरी
13—मालती चौधरी
14—अबला बोस
15—लक्ष्मीबाई राजवाडी
16—मैत्रेयी बोस
17—रामेश्वरी नेहरू
18—शरीफा हमीद अली
19—गोशीबेन कैप्टेन
20—धनवंती रमाराव
21—अनसुइयाबाई काले
22—प्रेमलीला ठाकरसी
23—मणिबेन पटेल
24—सरलादेवी साराभाई
25—अवन्तिकाबाई गोखले
26—सकीने लुक्मानी
27—जानकीबाई बजाज़
28—मुथुलक्ष्मी रेड्डी
29—चरुलता मुकर्जी
30—रुक्मिणी लक्ष्मीपति
31—मित्तनताता लाम
32—हन्नाह सेन
33—असवाह हुसैन
34—राधाबाई सुब्रायन
35—ताराभाई प्रेमचन्द
36—जेठी सिपाही मलानी
37—अम्बुजा अम्मा
38—जानकी अम्मा
39—लीलावती मुंशी
40—लावण्य प्रभादत्त
41—सोफिया वाडिया
42—मृणालिनी चट्टोपाध्याय
43—शारदा बेन मेहता
44—ज़रीना करीमभाई
45—प्रेम कैप्टेन
46—हेमप्रभा दासगुप्ता
47—प्रेमावती थप्पर
48—ज़ोरा अन्सारी
49—जैश्री रायजी
50—कित्ती शिवाराव
51—शन्नो देवी
52—वायलेट आल्वा
53—सुशीला जुल्कुसिंग
54—वीणादास
55—उमा नेहरू
56—इरावती कार्वे
57—रायवन तैय्यबजी
58—आशा आर्यनायकम्

[श्रीमती हंसा मेहता]

59–मृदुला साराभाई	67–राजन नेहरू
60–रक्षा सरन	68–इन्दिरा गांधी
61–मारगरेट कजिन्स	69–सुराया तैयबजी
62–कमला देवी	70–मेमोबाई
63–लक्ष्मी मेनन	71–पद्मजा नायडू
64–लावण्य चन्दा	72–किरन बोस
65–अयाशा अहमद	73–कुलसुम सयानी
66–कृष्णा हथीसिंह	74–लज्जावती देवी

मेरे पास एक सूची है जिसमें प्रायः भारत के सभी मुख्य संप्रदायों की एक सौ महिलाओं के नाम हैं जिन्होंने इस महोत्सव में सम्मिलित समझे जाने की इच्छा प्रकट की है। और भी कई शत महिलाऐं होंगी जो इसी तरह इस महोत्सव में सम्मिलित होना चाहती हों। इस परिस्थिति में यह उपयुक्त ही है कि पहली राष्ट्रीय पताका जो इस महिमा-मंडित भवन पर सुशोभित हो, उसे भारतीय महिला समाज एक उपहार की तरह उपस्थित करे *(हर्ष ध्वनि)*। इस केसरिया के अभ्युदय का श्रेय हमी को है। हमने देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किया है, कष्ट उठाये हैं और बलिदान किए हैं।

आज हमने अपना ध्येय प्राप्त किया है। अपनी स्वतंत्रता के प्रतीक स्वरूप इस पताका को उपस्थित करते हुए हम पुनः राष्ट्र के प्रति अपनी सेवाएं अर्पित करती हैं। हम सब इस बात के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होती हैं कि महान् भारत के निर्माण के लिए, एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण के लिए, जिसका सभी देश समादर करें, हम कार्य करेंगी। हम प्रतिज्ञा करती हैं कि प्राप्त स्वाधीनता के स्थायी बनाने के महत्तर उद्देश्य के लिए हम कार्य करेंगी। हमें उन महती परम्पराओं को, जिनके कारण अतीत काल में भारत इतना महान था, स्थायी रखना है। भारत के प्रत्येक स्त्री-पुरुष का यह धर्म है कि वह इन परम्पराओं की रक्षा करे ताकि भारतवर्ष संसार पर अपना आध्यात्मिक प्रभुत्व बनाये रखे। यह पताका हमारे महान् भारत का प्रतीक हो। यह सदा फहराती रहे और विश्व पर आज जो संकट की कालिमा छाई है, उसमें उसे यह प्रकाश दे। इसकी छत्र-छाया में रहने वाले प्राणियों को यह सुख और शांति दे। *(हर्ष ध्वनि)*

***अध्यक्षः** सभा की स्वीकृति की आशा करके मैंने चीन के भारत स्थित दूत, हिज एक्सिलेंसी डा. चियालानलो, द्वारा रचित एक कविता को इस अवसर के लिए सधन्यवाद स्वीकार किया है।

राष्ट्रीय गीतों का गायन

***अध्यक्ष:** कार्यक्रम का दूसरा विषय है–''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' तथा ''जन मन गण अधिनायक जय है'' शीर्षक कविताओं की प्रथम चन्द पंक्तियों का गान।

(श्रीमती सुचिता कृपलानी ने इन दोनों कविताओं की प्रथम कुछ पंक्तियों का गायन किया।)

***अध्यक्ष:** अब सभा कुछ घंटों के लिए कल प्रात: 10 बजे तक स्थगित होती है।

इसके बाद सभा शुक्रवार, 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को प्रात: 10 बजे के लिए स्थगित हुई।